चिदणु का सिद्धांत (Theory of Monad)

लाइबनित्ज एक ओर कहते हैं कि प्रत्येक चिदणु समस्त विश्व का जीवित दर्पण है और दूसरी ओर यह भी कहते हैं कि प्रत्येक चिदणु छिद्ररहित या गवाक्षहीन है| यहां प्रश्न यह उठता है कि यदि प्रत्येक चिदणु में समस्त विश्व प्रतिबिंबित है तो यह कैसे कहा जा सकता है कि उसमें किसी प्रकार का आदान-प्रदान संभव नहीं और ना ही वह किसी को प्रभावित कर सकता है और ना किसी से प्रभावित हो सकता है? इस आशंका का समाधान लाइबनित्ज इस प्रकार किया है-

प्रत्येक चिदणु पूर्ण है क्योंकि उसमें समस्त विश्व बीज रूप में अंतर्निहित है| वस्तुतः चिदणु में कोई पारस्परिक संबंध नहीं होता| प्रत्येक चित्रों परस्पर निरपेक्ष है| प्रत्येक चित्रण समस्त विश्व को प्रतिबिंबित करता है- इस कथन का तात्पर्य यही है कि समस्त विश्व चिदणु रूप में बीज रूप से विद्यमान है| चिदणु में समस्त विश्व का इतिहास विद्यमान है- भूत, वर्तमान और भविष्य सब कुछ उसमें अंतर्निहित है; क्योंकि भूत अपने चिन्ह वर्तमान में छोड़ जाता है और वर्तमान के बीज ही भविष्य के रूप में प्रतिफलित होते हैं| समस्त विश्व को प्रतिबिंबित करने का अर्थ है अपनी ही चित शक्ति का विकास करना| ' समस्त विश्व' का अर्थ है चित्तशक्ति क्योंकि चित्तशक्ति के अतिरिक्त विश्व में और कुछ नहीं है| प्रत्येक चिदणु में चित् शक्ति के रूप में समस्त विश्व विद्यामान है, किंतु बीज रूप में ही, विकसित रूप में नहीं| इस सुप्त शक्ति को जागृत अधिकाधिक चैतन्य प्राप्त करना करना, अधिकाधिक सक्रिय होना ही विश्व को प्रतिबिंबित करना है| यह अपनी ही सुप्त शक्ति की जागृति है, अपने ही गुप्त शक्ति का प्राकट्य है, अतः इसमें बाह्य प्रभाव का प्रश्न नहीं उठता| जब सब कुछ भीतर ही है, तो बाहर से से क्या लिया जाए| इस प्रकार लाइबनित्ज ने इस विरोधाभास की चिदणु छिद्र रहित होते हुए भी समस्त विश्व को अपने भीतर प्रतिबिंबित करता है- इसका समाधान करने की चेष्टा की है|

चिदणुओं का तारतम्य

चिदणु, मौलिक रूप में, अर्थात चित् शक्ति में समान होते हुए भी, इस शक्ति के क्रियान्वित विकास में, विभिन्न हैं| समस्त चिदणु एक ही विश्व को प्रतिबिंबित करते हैं, किंतु विभिन्न रूपों में| सब के प्रतिबिंब सम्मान नहीं है, शक्ति सब में बराबर है, किंतु उस शक्ति को क्रियान्वित कर के सबने एक रूप में नहीं पा लिया है| बुद्धि बीज रूप में, स्वरूप मानव मात्र में है, परंतु इसका विकास अलग-अलग मनुष्यों में अलग-अलग रूप में होता है| इस विकास को परस्पर संबद्ध सोपान श्रेणियां बनाकर अलग-अलग सोपान क्रम में श्रेणीबध किया जा सकता है| इसी प्रकार चिणुओं मे भी शक्ति के वास्तविक विकास की दृष्टि से श्रेणियां हैं| यह तारतम्य अखंड है; इसमें श्रृंखला टूटती नहीं, इसमें व्यवधान नहीं है| चिदणुओं का ज्ञान क्षीणतम, क्षीणतर, क्षीणस्पष्ट, स्पष्टतर और स्पष्टतम श्रेणियों में रखा जा सकता है| कुछ चिदणु सो रहे हैं, कुछ स्वप्न देख रहे हैं, कुछ जाग रहे हैं| लाइबनित्ज के अनुसार चिदणुओं को हम पांच श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं| वस्तुतः प्रत्येक चिदणु की अपनी अलग ही श्रेणी है; क्योंकि प्रत्येक चिदणु का ज्ञान अपने विशेषता रखता है और दो चिदणुओं मैं विश्व का प्रतिबिंब बिलकुल एक जैसा नहीं हो सकता| विश्व में ना अनावश्यकता है ना पुनरावृति| प्रत्येक चिदणु का अपना अलग विश्व है| आत: उतनी ही श्रेणियां हैं जितने चिदणु, इंदौर फिर भी समान प्रतिबिंबो के आधार पर स्थूल रूप में पांच श्रेणियां बताई गई है- प्रथम श्रेणी में आते हैं और अचेतन (अर्थात ईशत- चेतन) चिदणु जिनको लोक में 'जड़ जगत' कहा जाता है| इनमें चैतन्य सुप्त या मूर्छित रहता है| यह चैतन्य का क्षीणतम स्तर है; क्योंकि इसमें क्षीण तम संवेदन मात्र होता है| द्वितीय श्रेणी है उपचेतन चिदणु कि, जिस लोक में 'वनस्पति जगत' कहा जाता है| इसमें चैतन्य स्वप्न स्थित सा रहता है| क्षीणतर संवेदन का स्तर है जहां प्राण स्पंदन होने लगता है| अचेतन चिदणु और उपचेतन चिदणु दोनों को लाइबनित्ज ने ' साधारण या नग्न चिदणु नाम दिया है| तृतीय श्रेणी में आते हैं चेतन चिदणु जिनको लोक में ' पशु जगत' कहां जाता है| इनमें चैतन्य जागृत रहता है| यह स्तर क्षीण ज्ञान और स्पष्ट संवेदन का है, अतः इसे क्षीण- स्पष्ट स्तर कहा है| यह सहज मानसिक प्रवृत्तियों का स्तर है| यहां चिदणु ' जीव' कहे जाते हैं| चतुर्थ श्रेणी है स्वचेतन चिदणु की, जिससे लोक में ' मानव जगत' कहा जाता है| यह 'आत्मा जगत' है| यह स्पष्टतर ज्ञान का स्तर है; क्योंकि यहां चेतन स्वचेतन बन जाता है| पंचम और अंतिम श्रेणी में केवल एक ही चिदणु है- वह है परम चिदणु या ईश्वर जिनका ज्ञान स्पष्टतम है| यह 'दिव्य जगत' है| यह ' पुरुषोत्तम' का स्तर है| यह सब श्रेणियां परस्पर संबद्ध हैं| ऊपर की श्रेणी में नीचे की सब श्रेणियां आ जाती है| कोई वस्तु छूटती नहीं| नीचे की श्रेणी का आदर्श ऊपर की श्रेणी में जाना है| इन श्रेणियों में केवल विकास का भेद है, जातिगत भेद नहीं है| यद्यपि सभी चिदणु अपनी शक्ति के केंद्र हैं, तथापि वस्तुतः स्वतंत्र तो केवल स्वचेतन चिदणु हैं| स्वातंत्र्य का अर्थ लाइबनित्ज भी स्पिनोजा के सामान, ज्ञान -तंत्रता मानते हैं| स्वतंत्र का अर्थ है ज्ञान -तंत्र अर्थात ना अस्वतंत्र और ना परतंत्र और यह आत्मा- चिदणुओं मैं ही संभव है| सभी चिदणुओं का लक्ष्य है सर्वोत्तम चिदणु या ईश्वर के समान बनना| जैसे-जैसे चिदणु इस लक्ष्य की ओर बढ़ते जाते हैं वैसे वैसे वे अधिक ज्ञान तंत्र और उच्चतर होते जाते हैं अधिक विकसित और सक्रिय होते जाते हैं| इस प्रकार लाइबनित्ज ने चिदणुओं के तारतम्य का वर्णन किया है|